शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

हमीदुल्ला के नाटकों में नारी

अन्नू यादव (शोधार्थी)
वनस्थली विद्यापीठ,
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

नारी एक अद्भुत रचना है। हवा, पानी, नदी, पहाड़, फूल अर्थात् दृश्य और अदृश्य जगत में सर्वत्र उसे देखा जा सकता है, उसे लिखा जाता है। वह स्वयं कविता है, नाटक है, उपन्यास है, महाकाव्य है, संगीत है, कला है। हिन्दी में नारी के विषय में बहुत लिखा गया है, कभी सीता, द्रोपदी, कुंती, तारा, मंदोदरी और कभी अहिल्या के रूप में। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में नारी को निश्चय ही गौरवपूर्ण स्थान दिया है, और उसे देवी तथा लक्ष्मी के समकक्ष रखा है। यह उस समय की स्थितियों के ही अनुकूल था। ज्यों-ज्यों परिस्थितियों में परिवर्तन आता गया नारी के प्रति दृष्टिकोण में भी बदलाव आता रहा। प्रस्तुत शोध पत्र में हमीदुल्ला के नाटकों में नारी के विभिन्न रूपों पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

अतीत की नारी और सभ्य युग की नारी में बहुत अंतर है। शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान, अधिकार और समाज व्यवस्था के परिवर्तनों से नारी का रूप बदला है। आज की नारी उसी विकसित परम्परा का नवीनतम उत्कर्ष है। पहले नारी को घर की चार दीवारी के भीतर डाल दिया जाता था। प्राचीन काल से लेकर आज तक नारी को केवल शोभा और प्रदर्शन की वस्तु के रूप में ही देखा गया है। उसका शारीरिक और मानसिक शोषण होता रहा है। स्त्री स्वातंत्र्य न होने के कारण स्त्रियों का व्यक्तित्व विकृत हो गया और वह उपयोग की वस्तु बनकर रह गई। शिक्षा के प्रभाव, राजनीतिक चेतना और पँूजीवादी सभ्यता ने नारी-जीवन को नए आयाम दिए हैं। इसके फलस्वरूप नारी का समाज सुधारक रूप अपनी स्वतंत्रता के प्रति सजग रूप उसकी बौद्धिक मानसिकता आदि प्रवृत्तियाँ उभर कर प्रस्फुटित हुई है।

साहित्य को सभी विधाओं में नारी को स्थान मिला है। अनेक लेखकों ने नारी की दशा में अपने लेखन का माध्यम बनाया है। साहित्य में नारी के शोषण की करूण दशा का यथार्थ चित्रण इनमें मिलता है। हमीदुल्ला भी उन लेखकों में से एक रहे हैं जिन्होंने अपने नाटकों में नारी की स्थिति, समस्याओं को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया और नारी की दीन-हीन अवस्था से मुक्ति के लिए किए गए प्रयत्नों और सुधारों प्रकाश डाला है। अनेक नाटकों में नारी पात्रों का चित्रण अत्यंत जीवंत एवं सजीव प्रतीत होता है। अपने रमणीय रूप और कोमल भावनाओं के कारण नारी सदा साहित्यकारों के आकर्षण का केन्द्र बनी है। जीवन और कला के अतिरिक्त वह काव्य में भी अनिवार्य स्थान रखती है। हिन्दी कथा साहित्य में नारी-जीवन की तत्कालीन ज्वलंत समस्याओं को अभिव्यक्ति देने का सार्थक प्रयत्न किया है।

आदिकाल में नारी चित्रण का उज्जवल पक्ष मुख्यतः दो रूपों में चित्रित हुआ है प्रथम

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

वीरांगना रूप में तथा द्वितीय आदर्श सती रूप में। मध्यकालीन काव्य के अन्तर्गत संतों एवं कवियों द्वारा चित्रित नारी प्रायः हीन रूप में, उपस्थित हुई है। रीतिकाल के काव्य में कवियों ने नायिका भेद वर्णन में विशेष रूचि दिखाई। हमीदुल्ला जी ने अपने नाटकों 'दरिंदे', 'उलझी आकृतियाँ, 'हर-बार', 'अपना-अपना दर्द', 'दूसरा पक्ष', 'जैमती', 'ख्याल भारमली' आदि में नारी की अनेक समस्याओं को उजागर किया है।

बेरोजगारी और नारी शोषण

हमीदुल्ला कृत 'हर बार' नाटक में बेरोजगारी की गंभीर समस्या एवं उससे संबंधित ऐसी विकृतियों को उभारा गया है, जो हृदयद्रावक है। शोषण की क्रूर नग्नता को 'हर बार' में व्यक्त किया गया है। युवतियाँ रोजगार की तलाश में अपनी अथाह शक्ति लगा देती है, लेकिन जब सपने टूट जाते हैं तब उन्हें अपने शरीर और आत्मा दोनों को ही दाव पर लगाना पड़ता है। इस नाटक में शंकिता और मध्यमा दो प्रमुख नारी चरित्र है। शंकिता आज के युवा वर्ग की प्रतिनिधि है, विशेषकर उन युवतियों के भाग्य की विडम्बनाओं को उजागर करती है, जो धन कमाने के लिए अनेक कठिनाईयों का सामना करती है। शंकिता को नौकरी मिलती है, पैसा मिलता है, किंतु अपना शरीर बेचकर। कंपनी के विकास के लिए वह अपना शरीर सुलभ करती है। इसी कार्य हेतु उसे नौकरी पर रखा गया। कंपनी के स्वामी का दृष्टिकोण है "एवरी डे स्पेन्ट मस्ट बी फोरगोटन। बट यू आर नोट एक स्पैन्ट फोर्स फोर अस। युअर चारमिंग फीगर, लवली एपीयेन्स - आल फोर अवर कम्पनी।" स्वामी शंकिता को अपने प्रमोशन के लिए इस्तेमाल करता है। वह उसे मिस्टर मलिक के पास भेजता है "गेट रेडी फोर दी सेकरीफाइस . मिस्टर मलिक का पूरा ख्याल रखने का। कीप हिम इन गुड ह्यूमर। वो खुश होंगे। हमारा प्रमोशन होगा।"

बेरोजगारी की भयावह मार ने शंकिता को अपना सब कुछ न्यौछावर कर देने पर मजबूर कर दिया - "मैं एक वस्तु हूँ, जिसका अपना कुछ भी शेष नहीं है। लाश सा अचल जीवन। मांस नोचते गिद्ध। शून्य में भटकती जिन्दगी। न रोशनी, न मंजिल, न रोशनी का निशान।" शंकिता ने ठोकरें खाई, बांझ करार दी गई, परंतु वह रूकी नहीं क्योंकि उसमें ललक थी पैरों पर खड़ा होने की। वह अपने पैरों पर खड़ी भी हुई पर उसके साथ उसका शील भंग भी हुआ। इस नाटक में हमीदुल्ला ने बेकारी के दर्द को सीमाहीन एवं अनन्त पीड़ा के रूप में व्यंजित किया है।

पुरूष समाज द्वारा सदा से अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु स्त्री का शोषण किया गया है तथा उसके प्रेम, त्याग का गलत फायदा उठाया है और नारी को सदा घुट-घुट कर जीने को मजबूर किया है, 'दूसरा पक्ष' में हमीदुल्ला जी ने शीला, बिशन के माध्यम से यही दर्शाया है। बिशन शीला से प्यार का नाटक करता है उसके बाद पैसे के लालच में शीला द्वारा लिखे गए पत्रों के माध्यम से उसे ब्लैकमेल करता है। उसे बदनाम करने की धमकी देता है, तथा उससे पैसे की माँग करता है "मुझे तुम्हारे पत्र लौटाने में कोई ऐतराज नहीं है पर तुम्हें उनकी कीमत चुकानी होगी . . . सिर्फ दस हजार।"

आदिकाल से नारी जाति का शोषण होता आ रहा है। कभी दासी के रूप में, कभी बहू, कभी पत्नी के रूप में। नारी की अपनी चाह की किसी को परवाह नहीं। 'उलझी आकृतियाँ' नाटक में जीवन

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

की विवशताओं और बेरोजगारी के साथ ही सर्वव्यापी भ्रष्टाचार ने व्यक्ति को अपना अस्तित्व खो देने पर मजबूर कर दिया है। एक पति भी अपनी पत्नी को व्यभिचार के लिए मजबूर करने में संकोच नहीं करता। "हमारा अपना ठोस अस्तित्व विसंगत होकर टूट चुका है। स्नेह और प्रेम जैसे पारस्परिक संबंध मूल्यविहीन हो गए हैं।" केवल अवसरवादिता के दर्शन ही हम आज के समाज में कर सकते हैं। विकास और बेला का रिश्ता भी कुछ ऐसा ही है। जहां, बेला, विकास के मध्य प्रेम संबंध नहीं है बल्कि एक समझौता है "हमारे संबंध एहसान और सहायता जैसे खोखले मूल्यों पर आधारित कभी नहीं रहे। जो कुछ भी हमने एक-दूसरे के लिए किया है वह केवल हमारे आपसी समझौते के कारण था।" विकास जैसे पदाधिकारी ऐसे प्रतीक हैं जो अपने पद का दुरूपयोग कर मजबूर लोगों का शोषण कर रहे हैं। बेला पर गृहस्थी का सारा बोझ है। नौकरी करते हुए वह दूसरों की इच्छा पर चलने के लिए मजबूर है। नारी की इस दयनीय स्थिति को अभिव्यक्ति करते हुए कहती है "अभावों की दुनिया में मासूम लड़की सत्य और ईमान का दामन थामे चलती भी तो आखिर कब तक।"

पुरूष की कामुक प्रवृत्ति और नारी

'ख्याल भारमली' के माध्यम से नाटककार सदियों से होते आ रहे नारी के यौन शोषण को अभिव्यक्ति देते हैं। जिसकी प्रतीक है भारमली। भारमली नारी की आन्तरिक असहय वेदना, कुंठा, दैहिक-मानसिक शोषण, अत्याचार, युगों-युगों तक शोषित विवश नारी का प्रतिनिधि चरित्र बनकर उभरती है। भारमली एक दासी थी और उसकी संतान राजा का उत्तराधिकारी नहीं बन सकती थी इस कारण राजा भारमली को त्याग देते हैं। वह कहती है - "यह तो नारी शोषण है। समवेत स्वर - समय हमारा। कर सकते हम, जो भी चाहे। तुम हो नीचे कुल की। दासी हमारी। हम चाहे, तो तुम्हें अभी जिन्दा जलवा दें।" भारमली राजा के बाद फिर छली गई स्वामी जी के द्वारा। सभी उसके रूप पर मोहित रहे किसी ने उसकी पीड़ा नहीं देखी। वह दर-दर भटकती रही - "रूपवती! रंभा, मेनका या उर्वशी, कहाँ की जन्मी? . .यहाँ हमारे पास आओ, सुन्दरी। आओ। इतना संकोच क्यों? किसलिए?"

दरिंदे' नाटक में समाज के आध:पतन और स्त्रियों के शोषण का चित्रण है। जिसमें पशुओं को मनुष्य के समान तथा मनुष्यों को पशुओं के समान चेष्टाएं करते हुए दिखाया गया है। आधुनिक समाज में स्त्रियों की मर्यादा भी सुरक्षित नहीं है "केवल भेड़ और भेडिए जैसी छीनाझपटी है।" दरिंदे में लेखक ने भेड़-भेडिए को आधार बनाकर स्त्री के साथ हो रहे शोषण को चित्रित किया है।

इसी प्रकार 'अपना-अपना दर्द' नाटक में नाटककार ने दर्शाया है कि अभाव और मंहगाई ने माता-पिता के हृदय से वात्सल्य भाव को मिटा दिया है। अपनी बेटी मधु को आर्थिक संकट के चलते मामी के पास छोड़ देते हैं। घर का स्नेह और सुरक्षा की ललक उसे बिहारी के साथ रहने पर मजबूर करती है। पर यहाँ भी वह दरिन्दे 'बिहारी' का शिकार बनती है। जो उसका उपयोग धन कमाने के लिए करता है, मधु वेश्या बन जाती है, धन कमाने का जरिया, और अन्ततः वह उसे घर से निकाल देता है। इसी स्तब्ध और शोकावस्था में उसे डॉ.वीरेन आश्रय देता है परन्तु यहाँ पर भी उसे धोखा मिलता है उसका उपयोग

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

कर वीरेन अपनी पत्नी के लौटते ही उसे अनावश्यक बोझ की तरह हटा देता है। सबसे उपेक्षित सड़क के चैराहे पर बैठ मधु अन्ततः एक्सीडेंट से मर जाती है। नाटक के अंत में मधु के संवाद है "सड़क पर हर सवारी तेजी से गुजर जाती है। आदमी अंधे की तरह आखें झपकता रह जाता है। सब अपनी-अपनी सलीब ढो रहे हैं . .अपना-अपना दर्द। चारो और दरिन्दें हैं . ।"

परम्परा के प्रति विद्रोह

हमीदुल्ला जी ने नारी के शोषित रूप को दर्शाने के साथ-साथ अपने नाटकों में उसकी स्वतंत्र होने की चाह को भी उजागर किया है। एक ओर जहां नारी दबी कुचली जाती है वहीं दूसरी ओर उसी नारी में आधुनिकता का स्वर है। परम्परा के प्रति विद्रोह का भाव है। वह अपना जीवन अपने तरीके से जीना चाहती हैं। 'जैमती' नाटक में जैमती परम्परा के अनुसार नहीं चलना चाहती। नाटककार ने जैमती का उपयोग एक सम्भ्रान्त स्त्री द्वारा विद्रोह करके, मनचाहा वर पाने और उस वर के साधारण, ग्रामीण मशक्कत भरे जीवन को अपनाने के लिए दिखाए गए साहस का यशोगान करने के लिए किया है। जैमती एक विद्रोहिणी है, जो वैभवशाली लेकिन बूढ़े और अशक्त राजा को पति के रूप में अस्वीकार कर देती है और जात-पात, ऊँच-नीच की परवाह किए बिना एक हमउम्र व्यक्ति को पति के रूप में चुन लेती है। वह परम्परा को स्वीकार नहीं करती। बल्कि स्वच्छ जीवन जीना चाहती है। वह अपनी इच्छा से विवाह करना चाहती है जो कि परम्परा के विरूद्ध है वह स्वयं ब्राह्मण देवता को अपना टीका लेकर चौबीस बगड़ावत भाईयों में सिर्फ भोजा को देने कहती है "आपको राजा मेरा टीक लेकर कहीं भी भेजे - आप टीका चौबीस बगड़ावत भाईयों में सिर्फ भोजा को ही देना।" वह अपनी इच्छा व्यक्त करती है कि अपना विवाह स्वयं अपनी इच्छा से करना चाहती है "सम्बन्ध मेरा हो रहा है, उनका नहीं। भोगना मुझे है उन्हें नहीं। . . . हीरा - "किन्तु पिता द्वारा किया गया सम्बन्ध ? सामाजिक परम्पराएं ? . . जैमती - "मैं उन्हें तोड़ूगी। अपना पति स्वयं चुनूंगी।"

एक अन्य नाटक ख्याल भारमली में नाटककार ने स्त्री को लीक से हटकर आगे बढ़ते हुए दिखाया है। भारमली जिसका शोषण राजा द्वारा किया जाता है और उपभोग के बाद उसे त्याग दिया जाता है, वह इसका विरोध करती है। वह चुप बैठने के स्थान पर अपनी आवाज उठाती है और न्याय मांगती है। भारमली - "दासी नहीं। मैं महारानी भारमली हूँ। समवेत स्वर - "यही भूल है। बनी रहो दासी, बस दासी . . . कैसे हो सकती हो रानी, तुम महलों की ? . . . भारमली - "यह तो है अन्याय सरासर. . .।" वह स्वयं को दासी स्वीकार नहीं करती। वह अपना अधिकार मानती है राज्य पर और वहाँ बनी रहना चाहती है।

इसी प्रकार दूसरी स्त्री पात्र है उमादे। उमादे भी सदा से चले आ रहे बहु पत्नी प्रथा का पालन नहीं करती। राजा के द्वारा भारमली को रानी स्वीकारने के बाद वह अपनी स्त्रीत्व और अपने अहं भाव की रक्षा हेतु राजा को छोड़कर अपने पिता के घर चली जाती है। वह राजा के साथ रहना स्वीकार नहीं करती। वह स्वतंत्र जीवन व्यतीत करना चाहती है। इसलिए वह सब कुछ छोड़कर चली जाती है। हमीदुल्ला जी ने नारी के शोषण को चित्रित तो किया है उसके साथ ही

ISSN 2320 – 0871
17 जनवरी 2015

उसकी मुक्ति स्वतंत्रता का पक्ष भी लिया है। उनके सारे नारी पात्र पुरूष वर्चस्व के समाज के द्वारा शोषित हैं किन्तु कुछ चरित्र ऐसे भी हैं जो नारी अस्मिता की पहचान है।

हमीदुल्ला जी ने अपने समसामयिक जीवन से प्रभावित होकर, अपने आस-पास के वातावरण को अनुभव करके अपने नाटकों में स्त्री की दशा का चित्रण किया है। आज शिक्षा के कारण समानता के प्रति प्रशिक्षित स्त्रियाँ अधिकाधिक जागरूक होती जा रही हैं। उनका दृष्टिकोण तथा उनकी नैतिकता मान्यताएं इसी समानवादी विचारधारा से ओत-प्रोत होती जा रही हैं। आज स्त्री पुरूष के बराबर का दर्जा चाहती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 हमीदुल्ला - 'हर बार', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्मरण-1986, पृ.सं.24

2 वही, पृ.सं. 28

3 हमीदुल्ला - 'हर बार', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्मरण-1986, पृ.सं. 29

4 हमीदुल्ला, 'दुसरा पक्ष' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1974, पृ.सं. 83

5 हमीदुल्ला, 'उलझी आकृतियाँ', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1973, पृ.सं. 178

6 हमीदुल्ला, 'उलझी आकृतियाँ, पृ.सं.176

7 हमीदुल्ला, 'ख्याल भारमली', शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1981, पृ.सं. 51

8 हमीदुल्ला, 'ख्याल भारमली', शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण -1981, पृ.सं. 64, 65

9 हमीदुल्ला, 'अपना-अपना दर्द' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1974, पृ.सं. 122

10 हमीदुल्ला, 'जैमती', पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ.सं.37

11 हमीदुल्ला, 'जैमती', पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ.सं. 43

12 हमीदुल्ला, 'ख्याल भारमली', शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम, संस्करण -1981, पृ.सं.50